Research Journal of Language, Literature and Humanities E-ISSN 2348-6252
Vol. **3(8),** 7-11, September **(2016)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

डॉ० मोहन गुप्त 'अराज-राज' के रामकथापरक उपन्यास 'अराज-राज' में इतिहास एवं कल्पना तत्व

डॉ० विभा श्रीवास्तव
C-24/24 महाकाल वाणिज्यिक केन्द्र, नानाखेड़ा, उज्जैन, म.प्र., भारत
vibhanoop1@gmail.com

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 7th August 2016, revised 23rd August 2016, accepted 15th September 2016

शोध सार

भारत राम-कथा भारतीय चिन्तन का वह मेरूदण्ड है जिसमें साहित्य, कला, मनोविज्ञान एवं दर्शन की अवधारणाओं के विभिन्न सूत्र अनुस्यूत हैं। कालक्रम एवं विकासचक्र के परिवर्तन के साथ.साथ सामाजिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक अथवा आध्यात्मिक अवधारणाऐं राम-कथा के प्रतीक पुरूषों के माध्यम से अपने युग-सदंर्भ की व्याख्या करने के साथ ही प्रश्नों का समाधान भी खोजती रही हैं। इसी क्रम में डॉ० मोहन गुप्त द्वारा रचित रामकथापरक उपन्यासों में उस काल की सामाजिक, आर्थिक, व्यापारिक, शैक्षणिक गतिविधियों के वर्णन के लिए कल्पना तत्व का अद्भुत समावेश किया गया है । लेखक के द्वारा कथावस्तु के विस्तार में इस तरह के कल्पना तत्व का समावेश कथावस्तु को रोचक बनाता है। मात्र तथ्यों के आधार पर औपन्यासिक कृति का सृजन उसे इतिहास बना सकता है जबकि साहित्य सृजन में कल्पना का तत्व उस नीरसता को तोड़ता है। यह शोधपत्र डॉ० मोहन गुप्त के उपन्यास 'अराज-राज' की कथावस्तु रामकथा पर केन्द्रित कल्पना के उपयोग और ऐतिहासिक तथ्यों का अद्भुत संयोग प्रस्तुत करता है ।

शब्द कुंजियाँ:- राम-कथा, उपन्यास, अराज-राज, इतिहास, कल्पना

प्रस्तावना

रामकथा भारतीय साहित्य की आत्मा है। आदि कवि वाल्मिकि से आजतक राम के चरित्र को लेकर नित-नूतन स्वरूप मे कवि उनकी आराधना करते रहे हैं। इस प्रकार प्राचीन काल से लेकर आजतक रामकाव्य की एक लम्बी परम्परा दृष्टिगोचर होती है । फादर बुल्के के अनुसार- "वाल्मिकि रामकथा इतनी कारूणिक थी कि श्रोता या पाठक प्रभावित बिना हुए नहीं रह सकते थे।"[1]

हिन्दी में रामकथा को विर्णत करने वाला सर्वप्रथम महाकाव्य गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' ही है। 'विनय पत्रिका' में भी तुलसी ने रामभक्ति का बहुतही महत्वपूर्ण रूप प्रस्तुत किया है। डॉ० रामचन्द्र मिश्र ने इस सदंर्भ में अपने विचारर प्रस्तुत करते हुए कहा है कि- "'विनय-पत्रिका' तुलसी का विनय-काव्य है जिसमें उनके सम्प्रदाय की भक्ति भावना जो दास्य-भक्ति पर आधारित है साकार हो उठी है इसके फलस्वरूप राम के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा और पूज्य भावनाओं का प्रस्फुटन भी हुआ है।"[2]

इसी क्रम में रामकथा परक उपन्यासों की परम्परा में डॉ० रमानाथ त्रिपाठी द्वारा लिखा गया 'रामगाथा' अध्ययन और अनुसधांन की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसके ऐतिहासिक दृष्टिकोण पर प्रकाश डालते हुएलिखा गया है कि -

"ऐतिहासिक सत्य का प्रकाशन रामकथा के वास्तविक और आरम्भिक रूप को प्रकट करना, राम को जीते- जागते मानव के रूप में चित्रित करना, रामायणकालीन परिवेश वस्त्राभूषण खान-पान, रीति-नीति, जीव- वनस्पिति का इतना सजीव-चित्रण है कि पाठक को लगे कि वह राम के युग में पहुंच गया है। ये सभी सूत्र इतिहास को साहित्य के धरातल पर प्रस्तुत करने का प्रयास लक्षित करते हैं। इसलिए रामगाथा को ऐतिहासिक उपन्यास अथवा राम के चरित्र पर आधारित औपन्यासिक कृति कहा गया है।"[3]

इसी क्रम में मोहन गुप्त द्वारा रचित रामकथापरक उपन्यासों में उस काल की सामाजिक, आर्थिक, व्यापारिक, शैक्षणिक गतिविधियों के वर्णन के लिए कल्पना तत्व का अद्भुत समावेश किया गया है । लेखक द्वारा कथा-वस्तु के विस्तार में कल्पना तत्व का उपयोग अनिवार्य है। इसके उपयोग से कथा-वस्तु रोचक होती है तथा उसके निर्वाह में सरलता भी आती है। मात्र तथ्यों के आधार पर औपन्यासिक कृति का सृजन उसे इतिहास बना सकता है जबकि साहित्य-सृजन में कल्पना तत्व उसकी नीरसता को तोड़ता है - और फिर यदि कथा-वस्तु रामकथा पर केन्द्रित हो तो कल्पना का उपयोग अपरिहार्य ही बन जाता है। क्योंकि इस कथावस्तु के निर्वाह हेतु तथ्यात्मक जानकारियों के लिए सामग्री मिलना अत्यन्त कठिन ही नहीं असंभव कार्य है। फिर उस काल की सामाजिक, आर्थिक, व्यापारिक, शैक्षणिक गतिविधियों के वर्णन के लिए कल्पना तत्व का समावेश अपरिहार्य हो जाता है। और कदाचित् इस अपरिहार्यता ने लेखक की कृतियों की रोचकता एवं साहित्यिकता में अत्यधिक वृद्धि की है।

'अराज-राज' में कल्पना तत्व

औपन्यासिक कृति 'अराज-राज' में बालक शम्बूक का परिचय देने के लिए लेखक ने काल्पनिक कथा का सहारा लिया है शम्बूक को अध्ययनाकांक्षी दिखाते हुए लेखक ने उसे इस हेतु प्रयासरत दिखाया है। वह अपने पिता के व्यवसाय में रुचि नहीं लेता क्योंकि वह अध्ययन करना चाहता है - वह कुमार शत्रुघ्न से किसी भी गुरू के आश्रम में शिक्षा की अनुमति के सन्दर्भ में चर्चा करना चाहता है किन्तु अवसर न प्राप्त होने से वह निराश हो गया। लेखक ने शम्बूक के पिता के व्यवसाय के नाम और उसको सेनाध्यक्ष बनाए जाने की बात भी कल्पना से जोड़ी है -

वह उदास हो गया। उसके अन्तर्मन ने कई बार प्रयास किए कि विद्याध्ययन की उसकी आकांक्षा पूरी हो जाए। उसके पिता, भाई, परिजन आदि उसे अपने व्यवसाय में मन लगाने को कहते थे। 'चर्मापणम्' नाम से उसका श्रेष्ठ व्यवसाय था। राजसैनिकों के लिए चर्मपिटकाएं, शस्त्रों के आवरण, चर्मवस्त्र आदि का प्रदाय उसके पिता का एकाधिकार था। राजकुमार उसके पिता को सेनाध्यक्ष बनाने का विचार कर रहे थे। न जाने क्यों इसे धुन सवार हो गई थी कि पढ़ेगा।[4]

नगर सेठ सुदास के शम्बूक के पड़ोसी होने का तथा सुदास के पुत्र देवदत्त का शम्बूक का मित्र होने व उसके अध्ययन में मन नहीं लगने का चित्रण काल्पनिक है - "मुझे कोई अध्ययन नहीं करना। मेढको की तरह फक्किकाएं रटते-रटते मेरा तो माथा भन्ना गया। फिर मैं नगर सेठ का पुत्र मुझसे भिक्षा नहीं मांगी जाती।"

अयोध्या में व्यापार गति के मंद हो जाने का वर्णन भी काल्पनिक है। किन्तु लेखक ने कल्पना का वर्णन भी इतनी कुशलता से किया है कि यह वास्तविक लगता है क्योंकि यह संभव सा प्रतीत होता है कि जनप्रिय राजकुमारों के तथा राजवधू के वन चले जाने से व्यापारी व जनता किसी सीमा तक कर्म में मन्दी ला बैठे तो हों - किन्तु फिर भी उस परिस्थिति की तो कल्पना ही की जा सकती है -

व्यापार का आवागमन रुक गया। कृषि-क्षेत्रों में, निर्माणियों में, वनों में काम थम गया। कोष्ठागार स्थिर हो गया। वस्तुएँ विनष्ट होने की स्थिति में आ गईं। ग्रामों से आई हुई वस्तुओं की विपुलता के कारण राजकर्मचारी भी राजकोष्ठागार से वस्तुएँ नहीं ले रहे। उधर वणिजों के यहाँ वस्तुओं के अम्बार लग गए तथा कृषकों के, जानपदों के भण्डार खाली हो गए।

नन्दिग्राम में भरत और शत्रुघ्न के मध्य चल रही मन्त्रणा के बीच बाहर सेनानियों द्वारा पकड़े जाने पर एक बालक के चिल्लाने एवं उसके भरत की मध्यस्थता करने पर छूटने का प्रसंग भी काल्पनिक प्रतीत होता है। लेखक ने उस बालक द्वारा भरत को भैया संबोधित करना तथा भरत , द्वारा भी उसे ऐसा करने से नहीं रोकने की घटना कल्पना से ही चित्रित की है -

दोनों भाई इस प्रकार बात कर रहे थे कि बाहर से कोलाहल सुनाई दिया। एक ब्रह्मचारी बालक जोर-जोर से चिल्ला रहा था, मुझे छोड़ दो। मैं कोई गुप्तचर नहीं। मैं किसी विदेशी राजा का सैनिक भी नहीं। मैं महर्षि . . . ।

नन्दिग्राम में भरत द्वारा कार्यार्थियों से मिलने के लिये आयोजित सभा में बन्ध्या स्त्री का प्रसंग काल्पनिक प्रतीत होता है। इसमें लेखक ने सोमपुर ग्राम की एक ऐसी स्त्री को भरत की सभा में उपस्थित होकर अपनी दयनीय स्थिति का हल निकालने की प्रार्थना करते दिखाया है जो कि विवाह के आठ साल तक सन्तानहीन थी। किन्तु अब नवे वर्ष में गर्भवती है

और गर्भवती होने के बाद भी विवाह किया जा रहा था। उस स्त्री से उसके पति द्वारा दूसरा विावह करने का कोई अन्य कारण पूछने पर उसने किसी पुरविया सैनिक की लड़की में उसके पति की आसक्ति की बात की।

इसी प्रकार सोमपुर ग्राम के निवासी हरिदत्त का चरित्र काल्पनिक प्रतीत होता है जिसे पुरविया लोगों तथा उनके स्थानीय राजाओं के आतिथि होने की सूचना प्रदान करने के पुरस्कार स्वरूप दस ग्रामों का मालिक बना दिया गया - "निश्चित रूप से तो नहीं कह सकता, किन्तु ग्रामीणों में चर्चा है कि ये मगध देश की तरफ से आए हुए हैं। वहाँ के स्थानीय राजाओं के अतिथि हैं। कई स्थानीय नरेश सक्रिय लग रहे हैं।"

शीघ्र ही सोमपुर के ग्रामणी हरिदत्त को उस क्षेत्र का दशग्रामेश बना दिया गया तथा राजाज्ञा जारी कर दी गई। खुशी तथा कृतज्ञता के बीच ग्रामणी ने अपनी कटि पर बँधे पट्ट की ओर देखा, जिस पर पीतल के चमचमाते फलक पर पादुका-युगल के साथ धनुष का निशान बना था तथा नीचे लिखा था - 'दशग्रामेश'।

इसके साथ ही वहाँ आये कार्यार्यियों में से एक को कृषि भूमि के लिए राजा से प्रार्थना करना, एक व्यक्ति को उसके सौतेले भाई द्वारा सम्पत्ति में भाग न देना और एक भोगपत्नी को उसके स्वामी के साथ न रहने की इच्छा के कारण राजकोष से उसके भरण-पोषण की आज्ञा प्रदान किये जाने का चित्रण भी काल्पनिक है -

एक प्रार्थी को कृषि हेतु भूमि चाहिए थी, उसे राजाज्ञा के साथ मण्डलाधीश के पास भेज दिया गया। दूसरे को पिता की अवरूद्धा पत्नी का पुत्र होने से अपात्र माना था। इसे स्थानीय अधिकरणिक के पास तथ्यों की जाँच कर निर्णय लेने के लिए भेज दिया गया। एक भुजिष्या (भोगपत्नी) को उसका पति भरण-पोषण नहीं दे रहा था। . . . राजकोष से उसके भरण - पोषण की आज्ञा दे दी गई।

शूद्र बालक द्वारा भरत के पास जाकर किसी ऋषि के आश्रम में उसकी शिक्षा की व्यवस्था करने की प्रार्थना सत्य के निकट हो सकती है क्योंकि वर्ण व्यवस्था उस समय थी। किन्तु उस बालक द्वारा राम-लक्ष्मण, भरत-शत्रुघ्न एवं उनकी पत्नियों की आरती उतारने के स्वप्न संजोए उसकी माँ का कल्पना में चारो भाईयों एवं उनकी पत्नियों की आरती उतारने की अभिलाषा का प्रसंग काल्पनिक ही प्रतीत होता है।

क्या - क्या अभिलाषा की थी उसने मन में। इन श्याम-गौर जोड़ियों तथा उनकी सुन्दर वधुओं की आरती उतारुँगी। भरपूर दर्शन करुँगी। प्रत्यक्ष नहीं तो मन-ही-मन मीठा खिलाऊँगी। आठ दीपक सजाए थे उसने।

कीकट देश के राजा सुमेध एवं उसके सेनापति सोमापि के मध्य वार्तालाप तथा सोमापि का बन्दी बनाया जाना एवं सोमापि द्वारा उसे कारागृह की ओर ले जाते हुए सैनिकों की कैद से छूटकर भाग जाने का प्रसंग भी काल्पनिक ही प्रतीत होता है। अवध की सेना द्वारा उसके सेनापति को पराजित किये जाने से क्षुब्ध कीकट देश का राजा सुमेध अपने सेनापति सोमापि पर क्रोधित हुआ होगा एवं उसने अपने सेनापति को बन्दी बनाए जाने का आदेश दिया होगा यह कल्पना ही हो सकती है। साथ ही कारागाराध्यक्ष शुनक द्वारा सोमापि के भाग जाने के पश्चात् उसके वस्त्र प्राप्त होने पर सैनिको द्वारा सोमापि को कारागृह में डाल दिए जाने का मिथ्या समाचार प्रसारित करवाना भी काल्पनिक ही प्रतीत होता है। इसी प्रकार शुनक द्वारा प्रधान प्रहरी सुन्द को सोमापि की खोज में भेजे जाने का प्रसंग भी काल्पनिक प्रतीत होता है -"दो सैनिक बुलाकर इस कायर को पकड़ ले जाओ तथा कारागृह में डाल दो ताकि वही सड़-सड़कर मर जाए।"

सोमापि ने देखा कि सैनिक प्रमाद में सतर्क नहीं हैं। उसने मौका पाकर अपनी बलिष्ठ मांसल भुजाओं का एक तगड़ा झटका दिया। . . . मुँह, नाक से निकलते हुए खून को वे संभालते रह गए तथा सोमापि भाग गया।

कीकट राज्य के सेनापति सोमापि का सन्यासी बनकर अपने प्रयोजन की सिद्धि हेतु पुष्पपुर ग्राम जाकर योजनाबद्ध ढंग से अपनी गतिविधियों को क्रियान्वित करना कृति का कल्पना तत्व ही है। साथ ही सन्यासी बने सोमापि का सोमदास नाम से पुष्पपुर ग्राम के एक मंदिर में सिद्ध महात्मा के रूप में विख्यात होना तथा शुनक द्वारा भेजे प्रधान प्रहरी सकार का वेष बदलकर सकार बनकर सोमापि से मिलना -"दूसरे दिन सुबह तक तो नगरभर में बात फैल गई कि पश्चित के चन्द्रपुर से सोमदास नाम के एक सिद्ध महात्मा पधारे हैं।"

सन्यासी रूपधारी सोमापि से उग्रायुध का मिलने आना, सोमापि का उसे उसके बारे में सब कुछ सच-सच बता देना व सोमापि का उग्रायुध से राजमुद्रांकित श्वेत-पत्र मांगना ताकि कोई वेष बदलकर मेरे स्थान पर न आ जाए।

सकार का अपने एक दो मित्रों के साथ पुष्पपुर जाने का, वहाँ एक पण्य स्त्री मंजरी की दुकान पर जाकर एक कार्षापण में एक पात्र मद्य मांगने का तथा नगर के कोटपाल दुर्धर्ष के मंजरी से प्रेम संबंधो का चित्रण पूर्णतया काल्पनिक ही प्रतीत होता है।

लेखक द्वारा उल्लेखित पात्र मंजरी, सकार, शौण्डिक, दुर्धर्ष, रामू गन्धी, कोटपाल,रामपाल, प्रेमसुख काल्पनिक पात्र ही हैं जो कि कथावस्तु के विस्तार हेतु लेखक द्वारा प्रयुक्त किये गये हैं। इसी प्रकार स्थानों के नाम यथा -पुष्पपुर, रजकूपुरा इत्यादि भी काल्पनिक ही हैं।

इस औपन्यासिक कृति के अध्याय छब्बीस में लेखक ने विभीषण, सुमाली, कैकसी को सरमा, माल्यवान एवं मारीच कों पुष्पक विमान द्वारा लंका से विदा करने का दृश्य चित्रित किया है। जो कि लंका से माल्यवान की पुत्री अनला के दौहित्र लवण के विवाह समारोह में भाग लेने हेतु गंधर्वराज शैलूष के गन्धर्वनगर को गये। लवण का विवाह आर्य नृपति सुषेण की दौहित्री से हो रहा था।

गन्धर्व नगर में वर-वधू के लिए सुसज्जित मंच पर लवण के व्यवहार का वर्णन किंचित कल्पना से प्रेरित प्रतीत होता है जो कि विवाह के मंच पर ही आपत्तिजनक व्यवहार कर रहा था। और उसके इस व्यवहार से क्षुब्ध होकर मारीच द्वारा मंच पर ही अनेक थालों में भरकर मांस रखवा देना भी कल्पना तत्व ही प्रतीत होता है -

. . . एक आध होरा बैठकर फिर चल देता तथा सबके सामने किसी सुन्दरी का हाथ पकड़कर मंच पर ले जाता व उसका चुम्बन लेता और अपने पास बिठा लेता। फिर भूख लगने पर चल देता। . . .मारीच को एक उपाय सूझा। उसने बहुत से पशुओं का स्वादिष्ट मांस पर्याप्त मात्रा में रंग-बिरंगे थालो में भरकर मंच पर रख दिया ताकि वर वहाँ बैठा-बैठा उन्हे खाता रहे . . . मंच पर से उठे भी नहीं।

लवण के इस व्यवहार पर मारीच एवं युधाजित के मध्य संवाद में कुम्भकर्ण एवं दशरथ पर व्यंग्य कल्पना तत्व ही लगता है - जब युधाजित ने लवण के भुक्खड़पन को लेकर कुम्भकर्ण पर व्यंग्य किया तो मारीच ने प्रत्युत्तर में दशरथ पर व्यंग्य किया-

''लगता है, अपने मामा कुम्भकर्ण को गया है।'' युधाजित ने व्यंग्य किया।
''तो क्या दशरथ को जाता'' मारीच ने और भी गहरा व्यंग्य किया।

साथ ही मारीच व सरमा के मध्य होने वाला संवाद भी लेखक की कल्पना से उपजा संवाद है जहाँ सरमा स्त्रियों के साथ होने वाले बलात् व्यवहार पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उसे निषिद्ध ठहराती है।

भरत एवं उनके मातुल राजकुमार नीप के मध्य चर्चा में रक्षा बन्धन पर्व का उल्लेख भी लेखक द्वारा कल्पना तत्व का ही प्रयोग है-''माँ ने कहा था रक्षाबन्धन पर मैं भाई को बुलाऊँगी। उन्होंने संदेश भी भेजा था।'' कुमार ने कहा।

रचना के अन्तिम अध्यायों में अयोध्या की सेना के पाँचाल सेना के सहयोग से युधाजित, सुमेध तथा लवणासुर की संयुक्त सेना के साथ युद्ध में भी लेखक ने कल्पना तत्व के समावेश से युद्धवर्णन को रोचकता प्रदान की है। सुमेध की सेना में सोमदास नामक ग्रामणी का सेनापति बनकर युद्ध मैदान में आना तथा असली सोमापि द्वारा सुमेध को पकड़ने के पश्चात् ही सुमेध पर इस रहस्य के खुलने का प्रसंग काल्पनिक ही प्रतीत होता है-

तुम . . . तुम सोमापि हो **?** तो वह कौन है **?**
हाँ लालची गीदड़ ! मैं सोमापि हूँ, जिसे तूने जेल में डाल दिया था।

तो . . . सोमापि ने सुमेध की गर्दन पकड़ ली तथा उसके ऊपर चढ़ गया। शेष वीर उस रथ को घेरे रहे। तो - तो क्या करता है। यह जानना चाहता है कि मैं कारागार से कैसे निकल गया। मैं कारागार मे गया ही नहीं। तुम्हारे शुनक ने एक निर्दोष ग्रामणी सोमदास को कारागार में डाल दिया, जो आज तुम्हारी सेना का सेनापति है।

कल्पना तत्व के कुशल उपयोग से लेखक ने कथा की प्रस्तुति को अधिक रोचक ही बनाया है। कल्पना तत्व के उपयोग से कथा कहीं भी बाधित होती नहीं प्रतीत होती अपितु वह कथा के विस्तार में सहायक ही होती है।

'अराज-राज' में इतिहास एवं कल्पना तत्व

उपन्यास 'अराज-राज' रामकथा के पौराणिक ऐतिहासिक चरित्रों पर आधारित कृति है । इस कृति का आधार निश्चित ही ऐतिहासिक एवं पौराणिक गाथा ही है। इस गाथा को ही लेखक ने अपनी कल्पनाशीलता से विस्तार देकर इस साहित्यिक कृति का सृजन किया है। हजारों वर्षों से जनमानस के मनोमस्तिष्क में रामकथा अत्यन्त ही रोचक, महान कथा के रूप में विद्यमान है। यह कथा जनमानस की आस्था एवं भक्ति का केन्द्र है। हजारों वर्षों से चली आ रही यह कथा भारतीय समाज का पौराणिक इतिहास बन चुकी है। इस कृति में डॉ0 मोहन गुप्त ने इसी पौराणिक ऐतिहासिक गाथा को आधार बनाया है। लेखक ने 'वाल्मीकि रामायण', जिसे कि पारम्परिक इतिहास मानते हैं, तथा 'आनन्द रामायण' एवं 'अध्यात्म रामायण' जिन्हें कि पौराणिक इतिहास माना जाता है से ऐतिहासिक तथ्य उद्धृत किये हैं।

'अराज-राज' में लेखक ने उपन्यास के सभी मुख्य पात्रों के नाम 'वाल्मीकि रामायण' से लिये हैं। दशरथ, कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, जनक, सीता, माण्डवी, उर्मिला, श्रुतकीर्ति, वशिष्ठ आदि नाम 'वाल्मीकि रामायण' से ही उद्धृत किये गये हैं।

अयोध्या राज्य के मंत्रियों (अमात्यों) सुमन्त, धर्मपाल, सुराष्ट्र, अशोक, विजय, राष्ट्रवर्धन, धृष्टि व जयन्त के नाम इतिहास से ही लिये गये है, साथ ही सेनापति प्रसीदतु का नाम भी इतिहास से ही लिया गया है।

शम्बूक पात्र भी लेखक ने इतिहास से ही उठाया है।

गन्धर्व कन्या अनला, कैकेयी का भाई युधाजित भी इतिहास से उद्धृत चरित्र हैं।

महर्षि वाल्मीकि, विश्वामित्र, भारद्वाज, महर्षि कश्यप, मुद्गल एवं जाबालि भी रामकथा इतिहास के ही चरित्र हैं।

सुमित्रा के मायके के लोग भी पुराणों से उद्धृत हैं।

इसी प्रकार कुभीनसी भी इतिहास से ही उद्धृत चरित्र है।

शत्रुघ्न व भरत का गुल्म सेनानियों के साथ युद्ध एवं गुल्म सेनानियों के आक्रमण के समय भरत का मूर्छित होना 'आनन्द रामायण' से उद्धृत इतिहास है।

लवणासुर के साथ शत्रुघ्न की सेना का युद्ध भी रामकथापरक इतिहास का ही अभिन्न अंग है। परम्परागत रामकथा व रामचरितमानस को आधार बनाकर नागार्जुन ने अपनी कृति 'मर्यादा-पुरूषोत्तम' में रामजन्म से लेकर जलसमाधि तक के प्रासगिंक प्रसंग में अपनी सर्जनात्मक कल्पना व कौशल का परिचय दिया है- "यह कोई साधारण राजकुमार नहीं दशरथ के पुत्र मात्र समझकर कोई इनके व्यक्तित्व को नहीं परख सकता इनमें सम्पूर्ण संसार को सुखी बना देने की शक्ति निहित है।"[5]

निष्कर्ष

लेखक ने इस उपन्यास की रचना में रामकथा की ऐतिहासिकता के मूल्यों और आदर्शों का संरक्षण किया है। इसमें वर्णित कथा पूर्ण रूप से इतिहास नहीं है किन्तु वह रामकथा से संबंधित इतिहास का अभिन्न अंग अवश्य है। लेखक द्वारा प्रस्तुत कथा का पर्याप्त सांस्कृतिक एवं पारम्परिक आधार है और इसी से इस कृति को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कल्पना का समावेश करते हुए विश्लेषित किया गया है।

संदर्भ

1. बुल्के कामिल (1977). 'रामकथा और तुलसीदास', हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद ।
2. मिश्र रामचन्द्र (1963). 'हिन्दी पद परम्परा तथा तुलसीदास', सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ।
3. त्रिपाठी रमानाथ (1972). 'रामचरित मानस और पर्वाचंलीय महाकाव्य', आदर्श साहित्य प्रकाशन, नई-दिल्ली ।
4. गुप्त मोहन (1992). 'अराज-राज', राजपाल एण्ड सन्स, नई-दिल्ली ।
5. नागार्जुन (1989). 'मर्यादा पुरूषोत्तम', वाणी प्रकाशन, 21-ए दरियागंज, नई-दिल्ली ।